रिकॉर्ड: ओम नमो शिवाय:..... ओम शान्ती . प्रातःक्लास 26-1-67

बच्चों को समझाया गया है जब शान्ती में बैठते हैं जिसको नेष्टो कहा गया है, वो ड्रिल करवाई जाती है। अब बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, जो जीते जी मरे हैं। कहते हैं हम जीते जी मर चुके हैं। जैसे मनुष्य मरते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं। सिर्फ संस्कार रहते हैं। अब तुम भी बाप का बन कर दुनियासे मर गये हो। बाप कहते है तुम्हारे में भक्ति मार्ग के संस्कार थे। अभी वो संस्कार बदल रहे हैं। तो जीते जी तुम मरते हो नां। मरने से मनुष्य सब कुछ भूल जाते हैं फिर नये सिर पढ़ना होता है। बाप भी कहते हैं तुम भी जो कुछ पढ़े हुये हो वो भूल जाओ। तुम तो बाप के बन गये हो। तो भक्ति मार्ग की बातें जो पढ़ी सुनी है वो भूल जाओ। उनको याद भी नां करो। मैं तुमको नई बात सुनाता हूँ। भक्ति मार्ग में क्या-2 है वो भी सुनाता हूँ। तो अब वेदशास्त्र, ग्रन्थ, जप, तप यह सारी बातें मैं भूल जाओ। इस लिये कहा जाता है हियर नो ईविल, सी नो ईविल, यह तुमबच्चों के लिये है। कई बहुत शास्त्र आद पढ़े हुये हैं तो, पूरा मरे नां है तो फालतु आरग्यू करेंगे। कहेंगे बाप नें जो सुनाया है वो ही सच है। बाकी झूठे शास्त्र हम मुख में क्यों लावें। बाप कहते है वो मुख में लाओ ही नही। हियर नो ईविल.... बाप नें डायरेक्शन दिया है कुछ भी सुनो नही। बोलो भक्ति मार्ग से हम मर चुके हैं। अब ज्ञान सागर के हम बच्चे हैं तो भक्ति को हम याद क्यों करें। हम एक भगवान को ही याद करते हैं। बाप नें कहा है भक्ति मार्ग को भूल जाओ। मैं तुमको सहज बात बताता हूँ कि मुझे याद करो बीज को तो सारे झाड़ का ज्ञान तुम्हारी बुधी में आ जावेगा यह ज्ञान बुधी में भरपूर रहेगा। तो फिर भक्ति की बांस बिलकुल ही निकल जानी चाहिये। आरग्यू नही करना चाहिये। फलाने श्लोक में यह है वो कहेंगे फलाने श्लोक में यह है। तुम्हारी मुख्य है गीता। वेद आद कोई धर्म शास्त्र नही है। गीता में भी भगवान की समझानी है। वो है रचता और रचना के आद मध्य अन्त की व समझानी। वो लोग तो कह देते नेती-2। हमनही जानते हैं। गोया आर्फनस है। साधु सन्त आद सब आर्फन्स हैं नां। धणी धोणी कोई है नही जो समझावे कि यह भुख हड़ताल आद क्यों करते रहते हो। कितने नास्तिक बन गये हैं। अब तुम आस्तिक बन रहे हो यह है नई बात। नई बात पर हमेशा ज्यादहा ध्यान दिया जाता है। है भी बड़ी सिम्पल बात। सबसे बड़ी बात है याद करने की। घड़ी-2 कहना पड़ता है मनमनाभव। यह बहुत गुह्य बात है। इसमें ही विघ्न पड़ता है। बहुत बच्चे हैं जो तो दिन भर में दो मिन्ट भी याद नही करते हैं। बाप का बन कर भी काम अच्छा नही करते है तो फिर याद भी नही कर सकते हैं। विकर्म करते रहते हैं तो बुधी में बैठता ही नही। तो कहेंगे नां कि यह बाप की आज्ञा का निरादर है। चढ़ नही सकेंगे। वो ताकत नही मिलती। जिस्मानी पढ़ाई से भी बल मिलता है। पढ़ाई है सोर्स आफ इनकम। शरीर निर्वाह होता है। बाकी वेदशास्त्र आद पढ़ने से तो और ही गिरना होता है। पढ़ाई से फिर भी फायदा होता है सो भी अल्प काल के लिये। कई पढ़ते-2 मर जाते हैं। वो पढ़ाई थोड़ेई साथ लें जावेगी। दूसरा जन्म लिया फिर नये सिर पढ़ना पढ़ता है। यहां तो तुम जितना पढ़ेंगें वो साथ ले जावेंगे। तुम्हारी यह कमाई साथ चलनी है। बाकी तो वो सब है ही भक्ति मार्ग। ज्ञान क्या चीज है यह कोई भी नही जानते। रूहानी बाप तुम रूहों को बैठ ज्ञान देते हैं। एक ही बार बाप सुप्रीम रूह आकर रूहों को नालेज देते हैं। जिससे ही तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। भक्ति मार्ग में स्वर्ग थोड़ेई होता है। भक्ति मार्ग है ही नर्क। छोटा बच्चा भी झट कह देंगे जी ईश्वर तो सर्वव्यापी है। तो निधणका हुआ नां। अभी तुम धणी के बने हो। फिर भी माया ऐसी है जो तुम बचचो को भी आपस में लड़वा देती है। जो आपस में लड़ते हैं तो बाबा समझते हैं यह निधणके हैं। बाप की याद में नही रहते हैं। निधणके बन और कुछ नां कुछ पाप कर्म कर देते हैं। बाप कहते है मेरा बन कर फिर मेरा नाम मत बदनाम करो। एक दो से बड़े प्यार से चलो। उल्टा सुल्टा बोलो मत। बाप को ऐसी ऐसी अहिल्याओं कुबजाओं, गणिकाओं का भी उधार करना पड़ता है। कहते हैं भिलनी के बेर खाये। अब ऐसे भीलों के थोड़ेई खा सकते हैं। भिलनी से जब ब्राह्मण बन जाती है तो कैसे नही खा

ही ब्रह्मा भोजन की महिमा है। शिव बाबा तो खावेंगे नही। वो तो अभोक्ता है। बाकी यह रथ
ते है नॉं। तुम बच्चों को कोई भी आरगयू करने की दरकार नही है। अक्षर ही दो बोलो शिव बाबा
कहते है, सिर्फ रिफर करो। शिव बाबा को ही रुद्र कहा जाता है। रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला
तो रुद्र भगवान हुये नॉं। कृष्ण को तो नही कहेंगे। विनाश भी कोई कृष्ण नही कराते। बाप ही
पहले विनाश कराते है। बाप भी खुद नही करते। नही तो दोष आ जावें। वो तो है ही
मानव हर। बाप कहते है हम भी कोई कहते नही कि विनाश करो। यह सारा ड्रामा में ही नूंध है।
कुछ करता है क्या? बाबा शंकर दवारा विनाश कराते है यह भी गायन है। बाकी विनाश तो आपही कर
है। यह अनादी ड्रामा बना हुआ है जो समझाया जाता है। रचता बाप को ही सब भूल गये है।
है गाड फादर रचते है परन्तु उनको जानते ही नही। समझते है कि वो दुनिया क्रियेट करते है।
कहते है मै क्रियेट नही करता हूँ। मै चेंज करता हूँ। कलियुग को सतयुग बनाता हूँ। मै संगम पर ही आ
हूँ। जिसको गाया हुआ है सुप्रीम आस्पिशियस संगम युग। भगवान कल्याण कारी है। सबका कल्याण करते
न्तु कैसे और क्या कल्याण करते है यह भी कुछ नही कोई नही जानते है। अंग्रेजी में कहते है लिबरेटर
परन्तु इनका अर्थ थोड़ेई समझते है। बिगर अर्थ मेंढ़कों के मुआफिक टरी-2 करते रहते है। मेंढ़कों की
कलमस होती है तो धुन लगाते रहते है। बाप कहते है यह विद्वान पण्डित आद भी शास्त्रों की
धुन लगाते है। अर्थ कुछ नही। हर समय मेंढ़कों मुआफिक टरी-2 करते रहते है। कहते है भक्ति के बाद
मिलेगा खिरहयारी सदगती होगी। तो इसका मतलब भक्ति से दुर्गती होती है। तब ही तो भगवान
सदगती देते है। सब की सदगती कोई मनुष्य तो करनही सकते। नही तो परमात्मा को पतित पावन,
का सदगती दाता क्यों गाया जाये। बाप को कोई भी जानते नही। निर्धनके है। दुश्मन ठहरे नॉं।
डिफेम करना, नीचे गिराना इस पर केस भी चलता है। अब बाप भी क्या करें। बाप तो खुदमालिक
कि विनाश करवा देते है। अब तुम तो डिफेम नही करेंगे। तुम ऐसे थोड़ेई कहेंगे कि ईश्वर सर्वव्यापी
ब तुम किसीको समझाते हो तो कहते है यह तो कोवर्स ईश्वर सर्वव्यापी नही है। उनकी शिव
भी बहुत ही मनाते है। बाप कहते है मै आता हूँ भक्तों को फल देने। आता भी भारत में ही हूँ।
तो जरूर चाहिये नॉं। प्रेरणा से थोड़ेई काम होगा। इनमें प्रवेश कर उनके मुख दवारा मै ज्ञान देता
गऊ मुख की बात नही है। यह तो इस मुख की बात है। मुख तो मनुष्य का चाहिये या कि जनावर
इतना भी बुधी काम नही करती है। दूसरे तरफ फिर भागीरथ भी दिखाते है। वो कैसे और कब आते
ह जरा भी कोई को पता नही है। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते है कि तुम मर गये तो भक्ति मार्ग
एकदम भूल जाओ। जिसचीज ने दुर्गती को पंहुचाया है उनको मुख पर लाते ही क्यों हो। टाक्नो
, शिव भगवानोवाच्य मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। मै ही पतित पावन हूँ। तुम पावन हो
मैं फिर सबको ले जाऊंगा। यह मैसेज घर-2 में दो। बाप कहते है मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म
श होंगे और तुम पावन बन जावेंगे। विनाश सामने खड़ा है। तुम बुलाते भी हो कि हे पतित पावन
पतितों को पावन बनाओ। राम राज्य स्थापन करो। वो हर एक अपने -2 लिये कोशिश करते है। बाप
कहते है मै तो आकर सर्व की मुक्ति करता हूँ। सभी 5 विकारों रूपी जेल में पड़े हुये है। और सर्व की
गती करता हूँ। मुझे गाया भी जाता है सुख कर्ता दुख: हर्ता। राम राज्य तो सारी दुनिया में ही होगा
शास्त्रों में भी धृतराष्ट्र, युधिष्ठर, अन्धे की औलाद अन्धे। यह अक्षर है परन्तु उनका अर्थ अभी तुम
ते हो। कौरव है ही विप्रीत बुधी। पाण्डवों की है प्रीत बुधी। कोई-2 की तो फौरन विप्रीत बुधी
जाती है। कोई-2 की तो आहिस्ते-2 प्रीत जुटती है। कोई तो कहते है बस हम सब कुछ बाप को
र करते है। सिवाय एक के दूसरा कोई रहे ही नही। सबका सहारा एक ही है गाड फादर।

कितनी सिम्पल ते सिम्पल बात है। बाप को याद करो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा रानी बन जाओ यह स्कूल ही है विश्व का मालिक बनने का। तब चक्रवर्ती राजा नाम पड़ेगा। चक्र को जान कर फिर चक्र धारी बनने से फिर चक्रवर्ती राजा बनते है। यह बाप ही समझाते है। बाकी आगू कुछभी नही करनी है। बौलो भक्ति मार्ग की सब बातें छोड़ो। बाप कहते है सिर्फ मुझे याद करो। मूल बात ही यह है। तीव्र पुरुषार्थी जो होता है वो जोर से पढ़ाई को लग जाता है। जिसको पढ़ाई का शौक होगा वो सबेरे उठ कर पढ़ाई में लग जाते होंगे। भक्ति वाले भी सवेरे उठते है। नवधा भक्ति कितनी करते है। जब सिर काटने को लग जाते है तब सा० होता है। यहां तो बाबा कहते है यह सा० भी नुकसान कारक है। सा० में जाने से पढ़ाई और योग दोनों बन्द हो जाते है। टाईम वेस्ट हो जाता है। इसलिये ध्यान आदि का शौक तो बिलकुल ही नही रखना है। इसमें माया एकदम सत्यानाश कर देती है। यह भी बड़ी बिमारी है। जिससे फिर काट हो जाती है। माया की प्रवेशता हो जाती है। जैसे लड़ाई के समय न्यूज सुनाते है तो बीच में ऐसा कुछ रेकसब कर देते है जो कोई सुन ना सके। माया भी बहुतों को विघ्न डालती है। बाप को याद करने नी देती है। समझा जाता है इनकी तकदीर में विघ्न है। देखा जाता है माया की प्रवेशता तो नही है। वे कायदे बोलते तो नही है। फिर झट कान से पकड़ बाबा उतार देंगे। कोई मनुष्य कहते है सिर्फ हमको सा० हो जावे तो इतना धन माल सब हम आपको दे देवें। बाबा कहते है वो तुम अपने ही पास रखो। भगवान को तुम्हारे पैसा की दरकार रखी है क्या जो कहते है हो सब कुछ दे देंगे। बाप तो जानते है तुम सब मरने वाले हो। इस पुरानी दुनिया में जो कुछ भी है भस्म हो जावेगा, बाबा क्या करेंगे? बाबा के पास तो बूंद-2 तलाव हो जाता है। बाप के डायरेक्शन पर चलो। हास्पिटल कम यूनीवरसिटी खोलो। जहा पर कोई भी आकर विश्व का मालिक बन सके। तीन पैर पृथ्वी पर बैठ तुमको मनुष्य को नर से नारायण बनाना है। तीन पैर पृथ्वी के भी नही मिलते। तो बाप कहते है मै तुमको सब वेदों शास्त्रों का सार सुनाता हू। यह है सब भक्ति मार्ग के। बाबा कोई की निन्दा नही करते है। यह तो खेल बना हुआ है। वेहद का ड्रामा है नां। यह तो सिर्फ समझाने लिये कहा जाता है। है तो फिर भी खेल ही नां। खेल की हम निन्दा नही करते है। अनादी बना बनाया खेल है। इन बातों को और कोई भी नही जानते। हम कहते है ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा। तो वो फिर चन्द्रमा आद में जाकर ढूढ़ते है। वहां कोई राजाई रखी है क्या? जपानी लोग सूर्य को मानते है। हम कहते है सूर्यवंशी वो फिर सुरज की बैठ कर पुजा करते है। सुरज को पानी देते है। अब सूर्य पानी देते है कि हम उनको पानी देवें।? तो बाबाने बच्चों को समझाया कोई भी बात में ज्यादा आगू नही करना है। बात ही एक सुनाओ बाप कहते है मामेकम याद करो तो पावन बन, पावन दुनिया के मालिक बन जाओगे। तुमको कोई भी कुछ नही कहेंगे। अभी रावण राज्य में सब पतित है। परन्तु कोई अपने को पतित मानते थोड़ेई है। सन्यासियों को पतित कहो तो डण्डा भी मार देवें। गृहस्थी लोग तो जाकर नमन करते है। और कर्मबंधी नालायकों के करते है। गवर्मेन्ट समझती थोड़ेई है। खुद ही कहते है जीव घाती-महापापी। फिर खुद क्यों यह भूख हड़ताल आद करते है। तुम कह सकते हो यह पुरानी दुनिया बिलकुल पतित बन गई है। रावण का राज्य है नां। अब बाप आया हुआ है तबही तो कहते है मुझे याद करो। एक आख में शान्ती धाम एक आंख में सुख धाम। बाकी इस दुख धाम को भूल जाओ। तुम हो चैतन लाईट हाऊस। अब प्रदर्शनी का नाम रखा हुआ है "भारत दी लाईट हाऊस" । वो कोई अर्थ थोड़ेई समझेंगे। तुम अभी लाईट हाऊस हो नां। पोर्ट पर लाईट हाऊस स्टीमर को रास्ता बताते है। तुम भी सबको रास्ता बताते हो मुक्ति और जीवनमुक्ति धाम का। जबकोई भी प्रदर्शनी में आते है तो बहुत प्यार से बोलो गाड फादर तो सबका एक ही है नां? गाड फादर या परमपिता वो कहते है मुझे याद करो। जरूर मुख द्वारा कहेंगे नां। तो वो ही कहते है। (बाकी फिर पढ़ियेगा) अच्छा मात पिता बाप दादा का बच्चों को याद प्यार। ओम